फिजियोथेरेपी कोर्स कुटेल में शिफ्ट किया

करनाल। कल्पना चावला राजकीय मेडिकल कॉलेज के निदेशक डा. जगदीश चंद्र दुरेजा ने बताया कि कॉलेज ऑफ फिजियोथेरेपी का बीपीटी कोर्स 2018-2019 में पंडित दीनदयाल राजकीय स्वास्थ्य विश्वविद्यालय कुटेल (करनाल) की संबद्धता में शुरु हुआ था। इसकी कक्षाएं अब तक कल्पना चावला राजकीय महाविद्यालय, करनाल में चल रही थी जो अब कुटेल में शिफ्ट कर दी गई हैं।

उन्होंने छात्रों की शिक्षा को सुविधाजनक बनाने के लिए डीएमईआर ऑफिस के माध्यम से उपलब्ध करवाए गए आधुनिक फिजियोथेरेपी उपकरणों का उद्घाटन किया। इनमें एमडबल्यूडी, टीईएनएस, आईएफटी, अल्ट्रासॉनिक थैरेपी, लेजर, ट्रैक्शन प्रमुख हैं। इन उपकरणों से विद्यार्थियों को आधुनिक उपचार प्रदान करने में प्रशिक्षित किया जा सकेगा।

उन्होंने बताया कि आने वाले समय में इन्हीं उपकरणों को प्रयोग में लाते हुए नई ओपीडी सर्विस शुरू होने की संभावना है जिससे आसपास के रहने वाले हजारों जन सामान्य को लाभ मिलेगा। प्रिंसिपल कॉलेज ऑफ फ्यसीओथेरपी डॉ संतोष मुंडे ने इसके लिए निदेकशक डा. जगदीश चंद्र दुरेजा और डीएमईआर कार्यालय पंचकूला का आभार व्यक्त किया और विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी।

जागरूकता से पशुपालन को बनाएं लाभकारी एवं रोजमुखी धंधा : रांगी

इंद्री। गांव खेड़ी मानसिंह मे पशुपालन विभाग द्वारा पशु पालक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक ब्राह्मजीत सिंह रांगी मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे। उनका विभाग के अधिकारियों व ग्रामीणों द्वारा जोरदार स्वागत किया गया। इस मौके पर संयुक्त निदेशक को गुलदस्ता देकर व शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। शिवर में पशुपलकों को सरकार द्वारा पशुपलकों के लिए चलाई जा रही योजनाओं के बारे में जानकारी दी, तो वहीं पशुपालकों ने पशुओं से संबंधित बीमारियों एवं उनके रोकथाम के बारे में सवाल किए। इस शिविर में पशुपालकों को पशुओं को टीकाकरण करवाने, टैग लगवाने और पशुओं के स्वास्थ्य से संबंधित जागरूकता रखने के लिए जागरूक किया गया। इस मौके पर गांव खेड़ीमान सिंह में पशुपालकों में पशुओं में टीकाकरण को लेकर उदासीनता को दूर कर पशुओं को टीकाकरण के लिए राजी किया गया। इस गांव के पशु टीकाकरण में पीछे रहने के कारण ही गांव में इस शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर बोलते हुए संयुक्त निदेशक बी एस रांगी ने बताया कि पशुपलन विभाग हरियाणा सरकार के मार्गदर्शन में पशुपालकों की खुशहाली के लिए काम कर रहा है। सरकार ने पशु पालन की तरफ लोगों का रुझान बढ़ाने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करने की कई योजनाएं चलाई हुई है। पशुओं की बीमारियों का उपचार कर उन्हें अधिक स्वस्थ रखने के कार्य किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि पशुपालकों को समय-समय पर अपने पशुओं को टीकाकरण योजनाओं का लाभ उठाने में संकोच नहीं करना चाहिए। टीकाकरण से पशुओं को कई तरह के गंभीर रोगों से बचाया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि सरकार बेरोजगारों को पशुपालन को रोजगार के रूप में अपनाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठा रही है। उन्होंने पशुपलकों को विभाग द्वारा चलाई जा रही योजनाओं से लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि पशुपालन विभाग में 343 डॉक्टरों के रिक्त पदों को भरने की कार्रवाई चल रही है। इन पदों की पूर्ति होने के बाद प्रदेश भर में पशुपालकों को अधिक डॉक्टरी सुविधाएं मिलेंगी। उन्होंने कहा कि विभाग ने पशुपालकों को और अधिक दवाइयां उपलब्ध कराने के लिए 4 करोड से अधिक की दवाइयों की खरीद के ऑर्डर दिए हैं। उन्होंने फसलों पर इस्तेमाल हो रहे अत्याधिक खाद, कीटनाशक व खरपतवार नाशक दवाइयों से पशुओं पर पडने वाले कुप्रभाव से अवगत कराया। इस अवसर पर पशुपालन विभाग के एसडीओ नरेंद्र सिंह ने कहा कि पशुओं का समय समय पर टीकाकरण करवाना चाहिए और उन्हें कीड़े मारने की दवाई देते रहना चाहिए। पशुओं को नमक, मीठा सोडा और खनिज पदार्थों का मिश्रण आवश्यकतानुसार दिया जाना चाहिए।

इस मौके पर पशुपालन विभाग के डीडीए धर्मेंद्र सिंह ने पशुपालन विभाग द्वारा पशु पालकों के लिए किए जा रहे कार्यों का उल्लेख किया। इस शिविर में पशुपालन विभाग के डॉ तरुण कुमार, विकास कुमार, बलराज और अनूप सिंह तथा पशुपालक जगमाल संधू ने विचार रखें।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने वजीरचंद मेहता के निधन पर किया शोक प्रकट

करनाल। मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने करनाल प्रवास के दौरान पूर्व उद्योग मंत्री व समाजसेवी शशिपाल मेहता के निवास मॉडल टाऊन पहुंचकर उनके भाई वजीर चंद मेहता के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट किया और करीब 25 मिनट रूककर परिवार के सदस्यों को सांत्वना दी। करीब 85 वर्षीय वजीर चंद मेहता का 12 नवम्बर को तबीयत खराब होने की वजह से अचानक निधन हो गया था। वह अपने पीछे एक बेटा व एक बेटी छोड़ गए हैं।

इस मौके पर सांसद संजय भाटिया, भाजपा के प्रदेश महामंत्री एडवोकेट वेदपाल, जिलाध्यक्ष योगेन्द्र राणा, मेयर रेनू बाला गुप्ता, मुख्यमंत्री के प्रतिनिध संजय बठला, सीनियर डिप्टी मेयर राजेश अग्गी, समाजसेवी कृष्ण तनेजा, गुरविन्द्र मल्ली, भरत सिंह कपूर, रोहित धवन, मदन चौधरी, हरमीत सिंह हैप्पी, भाजपा नेता बृज गुप्ता, राजसिंह, कविन्द्र राणा, भारत भूषण कपूर सहित अन्य समाजसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने उपस्थित होकर परिवार को सांत्वना दी।

मुख्यमंत्री ने इसके उपरांत सैक्टर 13 स्थित पूर्व चेयरमैन राकेश नागपाल के पिता और समाजसेवी सतपाल नागपाल के देहांत पर शोक प्रकट किया और परिजनों का ढाड़स बंधाया। करीब 90 वर्षीय स्व. सतपाल नागपाल अपने पीछे 5 लड़के और हरा-भरा परिवार छोड़कर गए हैं।

इस मौके पर सांसद संजय भाटिया, असंध के विधायक शमशेर सिंह गोगी, भाजपा के प्रदेश महामंत्री एडवोकेट वेदपाल, जिलाध्यक्ष योगेन्द्र राणा, मेयर रेनू बाला गुप्ता, मुख्यमंत्री के प्रतिनिध संजय बठला, सीनियर डिप्टी मेयर राजेश अग्गी, डिप्टी मेयर नवीन, पूर्व विधायक भगवानदास कबीरपंथी, पूर्व जिलाध्यक्ष जगमोहन आनंद, भाजपा नेता कृष्ण गर्ग, वीर विक्रम कुमार, शिवनाथ कपूर, मनोज वधवा, श्याम बत्रा सहित अन्य समाजसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

कृषि कानून रद्द: अभी सवाल शेष हैं!

अमरीक

केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा विवादास्पद तीनों कृषि कानून रद्द करने का फैसला बताता है कि सरकार पहले दिन से ही इस मामले में गलत थी और यह भी बताता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हर फैसले के पीछे खास किस्म की राजनीति होती है। इस फैसले में भी जबरदस्त सियासत है। पंजाब के आंदोलनरत किसानों का मानना है कि अति उत्साह में केंद्र के इस फैसले का स्वागत करने की बजाय इसका समग्र विश्लेषण किया जाना चाहिए और सरकार से सवाल पूछने का सिलसिला रूकना नहीं चाहिए। सवाल क्या हैं?

बीते साल 26 नवंबर से किसान दिल्ली की विभिन्न सीमाओं पर इन कृषि कानूनों के खिलाफ आंदोलनरत हैं तथा शांतिपूर्ण ढंग से धरना-प्रदर्शन कर रहे हैं। आंदोलनरत किसानों में से 100 से ज्यादा किसान अपनी जान से हाथ धो बैठे हैं। इनमें महिलाएं भी हैं। मारे गए ज्यादातर किसान अपने-अपने परिवारों के पालनहार थे। यहां तक कि सुदूर लखीमपुर खीरी में भी केंद्रीय राज्यमंत्री की गाड़ी ने किसानों को कुचल कर मार डाला। एक सर्वेक्षण बताता है कि आंदोलन में मुतवातर बैठे किसानों की आर्थिक बदहाली में इजाफा हुआ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस सब पर कुछ नहीं बोले हैं। 26 जनवरी की लाल किला हिंसा के आरोप में भी कई किसान जेल में हैं और कईयों पर मुकदमे बनाए गए हैं। उनका क्या होगा? दिल्ली और हरियाणा में सरकार की शह पर किसानों पर अमानवीय अत्याचार किए गए। क्या उन्हें भी अब इंसाफ मिलेगा? किसान, कृषि कानूनों को रद्द करने के साथ-साथ अन्य कुछ मुद्दे भी अपने आंदोलन में उठाते थे। उन पर भी केंद्र सरकार खामोश है।

अगले साल के शुरू में पंजाब और उत्तर प्रदेश सहित 5 राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। भाजपा के लिए पंजाब अहम है, जहां उसका अब कोई नामलेवा नहीं। कैडर तो है लेकिन सियासी जमीन इसलिए भी खिसक चुकी है कि शिरोमणि अकाली दल से गठबंधन किसानों के मसले पर टूट गया तथा किसान (जिनमें सिखों की तादाद ज्यादा है) भाजपा नेताओं का घरों से निकलना तक मुश्किल कर रहे हैं। दरअसल, नरेंद्र मोदी ने एक हफ्ते के भीतर दो फैसले ऐसे लिए, जिनके केंद्र में कहीं न कहीं पंजाब है। पहला, गुरु नानक देव जी के प्रकाश उत्सव की पूर्व संध्या पर श्री करतारपुर साहिब कॉरिडोर खोलना और दूसरा, ऐन उनके जन्मदिवस पर कृषि कानून रद्द करने की घोषणा। यह वक्त पर है कि इन फैसलों का क्या असर होगा और पंजाब में लुंज-पुंज भाजपा को इसका कितना फायदा मिलेगा। इतना तो तय है कि पंजाब के सियासी समीकरण यकीनन बदलेंगे।

बादलों की सरपरस्ती वाला शिरोमणि अकाली दल महज केंद्र के कृषि कानूनों के मुद्दे पर भाजपा से अलहदा हुआ था। उसे सत्ता में लाने के लिए हिंदू मतों का बड़ा योगदान रहता है। भाजपा के जरिए शिरोमणि अकाली दल को पर्याप्त मत हासिल होते थे और इन दिनों प्रकाश सिंह बादल और सुखबीर सिंह बादल की चिंता का सबब था कि इस बार हिंदू मत पहले की मानिंद कैसे हासिल होंगे? सुखबीर सिंह बादल शिरोमणि अकाली दल का चुनाव अभियान शुरू कर चुके हैं और हिंदू मतों पर निगाह रखते हुए वह मंदिरों में खूब मत्था टेक रहे हैं। नरेंद्र मोदी द्वारा कृषि कानून रद्द करने की घोषणा के साथ ही सूबे में कयास लगने शुरू हो गए कि भाजपा और शिरोमणि अकाली दल फिर एक प्लेटफार्म पर आ सकते हैं।

ऐसा होता है तो कांग्रेस और आम आदमी पार्टी (आप) के लिए तगड़ी दुश्वारियां खड़ी हो जाएंगीं। उधर, कांग्रेस से जुदा होकर अलग पार्टी बनाने वाले कैप्टन अमरिंदर सिंह इस उम्मीद में थे कि वह मध्यस्था करके किसान आंदोलन खत्म कराएंगे और केंद्र के कृषि कानूनों को रद्द करवाने में भूमिका निभाकर 'नायक' की छवि हासिल करेंगे। उनकी रणनीति भी औंधे मुंह गिर गई है।

मलेरिया, डेंगू व चिकनगुनिया से बचाव के लिए मच्छरजनित बीमारियों से रहे सतर्क - सिविल सर्जन

करनाल । सिविल सर्जन डॉ. योगेश शर्मा ने कहा है कि मच्छर के काटने से डेंगू, चिकनगुनिया और मलेरिया जैसी घातक बीमारियां होती हैं। यह बातें जान लेना इसलिए जरूरी हैं क्योंकि विभिन्न जगहों पर जलभराव की वजह से मच्छर पैदा होते हैं। उन्होंने कहा कि मच्छरों से फैलने वाली बीमारियों के प्रति लोगों का जागरूक होना जरूरी है।

उन्होंने लोगों से आग्रह किया है कि मलेरिया, डेंगू व चिकनगुनिया से बचाव के लिए पानी के बर्तन, टंकी, घड़ों आदि को ढककर रखें और सप्ताह में एक बार फूलदान, फ्रिज की ट्रे, पशु व पक्षियों के बर्तन व ड्रमों को खाली करके सुखाएं और फिर उनमें पानी डाले। शरीर को पूरी तरह से ढकने वाले कपड़े पहने। ठहरे पानी में लारवा नाशक दवा डाले। उन्होंने बताया कि जहा पानी ठहरेगा। वहीं मच्छर पलेगा और यदि हम पानी ठहरने नहीं देंगे तो मच्छर भी पैदा नहीं होगा।

सिविल सर्जन ने कहा कि जलभराव में सबसे ज्यादा परेशान मच्छरों से होने वाली बीमारियां करती हैं। ऐसी ही एक बीमारी का नाम है मलेरिया। यह बीमारी फीमेल एनोफेलीज मच्छर के काटने से होती है। इस बीमारी से पीड़ित व्यक्ति में बुखार, सिरदर्द, बदनदर्द, कमजोरी, चक्कर आना जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। इस बीमारी से बतने के लिए व्यक्ति को पूरी तरह ढके हुए कपड़े पहनने चाहिए। इसके अलावा अपने आसपास साफ-सफाई का भी ध्यान रखें। घर के आसपास जलभराव न होने दें। समय-समय पर मच्छरों को दूर रखने के लिए घर की नालियों के आसपास स्प्रे करवाते रहें।

सिविल सर्जन ने कहा कि मच्छरों से होने वाली डेंगू दूसरी गंभीर बीमारी है। डेंगू से हर साल सैकड़ों लोग अपनी जान गवां देते है। इस बुखार से पीड़ित व्यक्ति में सिरदर्द, रैशेज, मांसपेशियों और जोड़ों में दर्द, ठंड लगना, कमजोरी, चक्कर आने जैसे लक्षण दिखाई देते है। डेंगू से पीड़ित व्यक्ति को ज्यादा से ज्यादा लिक्विड डाइट लेनी चाहिए। इसके अलावा इन लक्षणों के नजर आते ही तुरंत डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए। उन्होंने कहा कि उपरोक्त के अलावा मानसून में एडिस मच्छर के काटने से चिकनगुनिया होता है। इस बीमारी के लक्षण डेंगू से मिलते-जुलते होते हैं। यह मच्छर ज्यादातर दिन के समय काटते है। सिरदर्द, आंखों में दर्द, नींद न आना, कमजोरी, शरीर पर लाल चकत्ते बनना और जोड़ों में तेज दर्द इस बीमारी के लक्षण है। इस बीमारी से बचने के लिए घर के आस-पास सफाई रखें ताकि आपके आस-पास मच्छर न पैदा हो सके।

पिछले राज में नौकरियों की होती थी बंदरबांट -सुधीर चौधरी

इन्द्री(जेके शर्मा) भाजपा किसान मोर्चा के हल्का महामन्त्री सुधीर चौधरी ने कहा कि हरियाणा सरकार ने सरकारी कामकाज के तरीके में बदलाव कर नई परम्परा स्थापित की है। मनोहर सरकार ने ऐसे ठोस उपाय किए हैं जिनकी कल्पना करना भी इस सरकार के बनने से पहले कठिन और असंभव प्रतीत होता था। चतुर्थ श्रेणी सेवादार से लेकर प्रशासनिक सेवा तक की नियुक्तियों में पारदर्शिता लाना अपने आप में एक टेढ़ी खीर था। मगर सरकार के घोर विरोधी भी अब खुलकर यह बात स्वीकार करने लगे हैं कि हरियाणा इस मामले में वास्तव में बदल रहा है। नौकरियां अब योग्यता के अनुसार हो रही है। हरियाणा में मेहनत और मेरिट का ही बोलबाला है।

उन्होंने कहा कि नौकरियों की बोलियां लगती थी, मगर भाजपा के शासन में साधारण से साधारण परिवारों के बच्चों को भी उनकी प्रतिभा के आधार पर ऊंचे पदों पर नियुक्तियां मिल रही हैं। यह एक क्रांतिकारी बदलाव है। उन्होंने कहा कि पारदर्शिता को पसंद करने वाले आम हरियाणवी इस नई व्यवस्था से खुश हैं। पिछली सरकारों में गरीब आदमी का बच्चा तो नौकरी के लिए नेताओं की चौखट पर ताल बजाता रहता था। हरियाणा सरकार के इस क्रांतिकारी कदम के दूसरे राज्य भी सराहना कर इस प्रणाली को लागू करने में लगे हैं।